1 भाषा और व्याकरण

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) जो बोली हम व्यवहार में प्रयुक्त करते हैं, उसे भाषा कहते हैं।

(ख) भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है।

(ग) मनुष्य अपने विचार तीन प्रकार से प्रकट करता है—
1. बोलकर, 2. लिखकर, 3. संकेतों द्वारा।

(घ) भाषा को लिखने की विधि लिपि कहलाती है।

(ङ) किसी भाषा के प्रयोग की नियमावली को व्याकरण कहते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) मातृभाषा
 (ख) (ii) भाषा से
 (ग) (iii) चिन्ह्
 (घ) (i) दो
 (ङ) (iii) देवनागरी

2. (क) संस्कृत की लिपि **देवनागरी** है।
 (ख) व्याकरण से भाषा के **शुद्ध** रूप का ज्ञान होता है।
 (ग) भारत में **14 सितम्बर** को हिन्दी-दिवस मनाया जाता है।
 (घ) मातृभूमि की भाषा को **मातृभाषा** कहा जाता है।
 (ङ) लिपि का संबंध भाषा के **लिखित** रूप से होता है।

3. (क) भाषा विचारों के आदान-प्रदान का वह साधन है, जो बोलने या लिखने के प्रयोग में लाया जाता है।
 (ख) व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा किसी भाषा के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
 (ग) भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।
 (घ) इसके अंतर्गत वाक्यों की रचना, उनके भेद, उपभेद, उनके पारस्परिक संबंध, रूपांतरण, उनकी शुद्धता-अशुद्धता तथा विराम-चिन्ह्ों आदि पर विचार किया जाता है।

4. (क) भाषा के दो रूप होते हैं—
 1. मौखिक या उच्चारित भाषा,
 2. लिखित भाषा।

 1. मौखिक या उच्चारित भाषा— मुख से बोलकर जो विचार प्रकट किए जाते हैं, वह मौखिक भाषा है। लोक-व्यवहार में भाषा के इस रूप का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है। मौखिक भाषा में सार्थक ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है।

 2. लिखित भाषा— मौखिक भाषा को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो यह भाषा का लिखित रूप 'लिखित भाषा' कहलाता है। लिखित भाषा में ध्वनियों के स्थान पर वर्णों या अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

 (ख) बोली भाषा के क्षेत्रीय रूप को कहते हैं। बोली का क्षेत्र सीमित होता है। जबकि भाषा को लिखने की विधि लिपि कहलाती है।

 (ग) व्याकरण के प्रमुख रूप से तीन अंग माने जाते हैं—
 1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार,
 3. वाक्य-विचार

5.

राज्य	**भाषा**
महाराष्ट्र	मराठी
केरल	मलयालम
पंजाब	पंजाबी
गुजरात	गुजराती
गोवा	कोंकणी
मणिपुर	मणिपुरी
बिहार	हिन्दी
बंगाल	बंगाली

❋ ❋

2 वर्ण-विचार

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) लिखित भाषा की उस छोटी से छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके खंड न किए जा सकें; जैसे— अ, उ, ग्, च् आदि।

(ख) जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा-काल) लगता है और जो खींचकर नहीं बोले जाते, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जबकि जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है तथा जिन्हें कुछ खींचकर बोला जाता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहा जाता है।

(ग) अनुस्वार और विसर्ग दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन; जैसे— अतः, अंतःकरण आदि। इनका स्वर तथा व्यंजन के साथ योग नहीं है। इसलिए ये अयोगवाह कहलाती हैं। ये हैं— अं और अः।

(घ) स्पर्श व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, इसी कारण ये स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं— ये 'क' से 'म' तक हैं।

(ङ) व्यंजनों के भेद— व्यंजनों को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा गया है— (i) स्पर्श व्यंजन, (ii) अंतस्थ व्यंजन, (iii) ऊष्म व्यंजन

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) 33   (ख) (i) 2
   (ग) (i) 4   (घ) (ii) तीन
   (ङ) (i) तीन

2. (क) राजस्थान   (ख) बालिका
   (ग) मोबाइल   (घ) ड्रम

3.

अनुस्वार	**अनुनासिक**
अंत	आँख
संशय	चाँद
अंडा	मुँह
वंश	पाँच
अंतर	बाँसुरी
पंख	
दंत	

4. **स्वर**- उ, इ, ए, ओ, ई, अ, ऊ, आ, ऋ, ऐ, औ।

   व्यंजन- प, त, च, ड़, ठ, ण, न, ट, ज, म।

5. (क) लिखित भाषा की उस छोटी से छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके खंड न किए जा सकें; वर्ण दो प्रकार के होते हैं— 1. स्वर, 2. व्यंजन।

   (ख) जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से हो जाता है, वे स्वर कहलाते हैं।

   (ग) **स्वरों के भेद—** उच्चारण की दृष्टि से स्वरों के तीन भेद होते हैं—

   (i) ह्रस्व स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा-काल) लगता है और जो खींचकर नहीं बोले जाते, उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है; जैसे— अ, इ, उ, ऋ

   (ii) दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है तथा जिन्हें कुछ खींचकर बोला जाता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहा जाता है; जैसे— आ, ई, ऊ, ए

   (iii) प्लुत स्वर— प्लुत स्वर, ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर से सामान्य उच्चारण समय से अधिक समय लेते हैं। इसके उच्चारण में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत दिखाने के लिए '३' का चिन्हबना दिया जाता है; जैसे— 'ओ३म'।

   (घ) **संयुक्त व्यंजन—** दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बनने वाले व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—क्ष = क् + ष = कक्षा; त्र = त् + र = त्रिशूल।

द्विवित्व व्यंजन— जो व्यंजन दो समान व्यंजनों के संयोग से बनते हैं, वे द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं; जैसे— च्च = बच्चा, त्त = कुत्ता।

(ङ) स्पर्श व्यंजन—

कवर्ग — क, ख, ग, घ, ङ

चवर्ग — च, छ, ज, झ, ञ

टवर्ग — ट, ठ, ड, ढ, ण

तवर्ग — त, थ, द, ध, न

पवर्ग — प, फ, ब, भ, म

इन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, इसी कारण ये स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

❊ ❊

3 शब्द विचार

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) भाषा की वास्तविक संपदा शब्द है।

(ख) वाक्य में प्रयुक्त शब्द के व्यावहारिक रूप को पद कहते हैं।

(ग) व्युत्पत्ति से तात्पर्य है— बनावट।

(घ) विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iii) विम्मत
   (ख) (iv) योगरूढ़
   (ग) (i) तत्सम
   (घ) (iii) संकर शब्द
   (ङ) (iii) यौगिक

2. (क) श्याम—साँवला, श्रीकृष्ण का एक नाम
   (ख) जलज— कमल, मछली
   (ग) पय— दूध, जल
   (घ) तीर— किनारा, बाण

3. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓

4.

साँप	- सर्प	सात	- सप्त
साँझ	- संध्या	घी	- घृत
दाँत	- दंत	गाँठ	- ग्रंथि
कबूतर	- कपोत	चमड़ा	- चर्म
नाक	- नासिका		

5. **देशज—** हाथ, भाग, बल, गाँव, धूप, रोटी, घोड़ा, झोंपड़ी, डिबिया।
   विदेशी— ऑफिस, तारीख, टेलीफोन, बेल, स्टेशन, बच्चा, लाइब्रेरी, प्रिंसिपल, अखबार, क्लास।

6. (क) प्रत्येक स्वतंत्र सार्थक वर्ण-समूह शब्द कहलाता है, परंतु जब उसका प्रयोग वाक्य में होता है, तो वह स्वतंत्र नहीं रहता। वाक्य के नियमों के कारण शब्द एक अनुशासन में बँध जाता है और पद कहलाता है।
   (ख) वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-के-त्यों संस्कृत भाषा से हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जबकि संस्कृत भाषा के जो शब्द अपना रूप बदलकर हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं।
   (ग) अर्थ के आधार पर शब्दों को चार प्रमुख भेदों में वर्गीकृत किया गया है
   1. एकार्थी शब्द, 2. अनेकार्थी शब्द, 3. पर्यायवाची शब्द, 4. विलोम शब्द
   (घ) जिन शब्दों के रूप में किसी भी कारण विकार (परिवर्तन) नहीं आता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे— वह **आज** आएगा।

7. (क) शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है—
   (i) उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर वर्गीकरण
   (ii) व्युत्पत्ति (रचना) के आधार पर वर्गीकरण
   (iii) अर्थ के आधार पर वर्गीकरण

(iv) प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण।

(ख) **विदेशी शब्दों के उदाहरण—**

अंग्रेजी— कार, बटन, डॉक्टर, स्कूल, पैंट, कोट आदि।

अरबी— वकील, किताब, औरत, दारोगा, खर्च, मकान आदि।

फारसी— दुकान, बादाम, फौज, कागज, दरबार, मुर्दा आदि।

तुर्की— तोप, कुरता, लाश, कैंची, चाकू आदि।

पुर्तगाली— कमरा, तौलिया, अलमारी, काजू, फीता आदि।

फ्रांसीसी— इंजीनियर, कार्टून, बिगुल, पुलिस, कूपन आदि।

यूनानी (ग्रीक)— टेलीफोन, डेल्टा, ऐटम, टेलीग्राम आदि।

चीनी— चाय, पटाखा, लीची, तूफान आदि।

(ग) ऐसे शब्द जो एक से अधिक सार्थक खंडों से मिलकर बने हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जबकि जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने हों, किंतु जिनसे सामान्य अर्थों का बोध न होकर विशेष अर्थो का बोध हो, योगरूढ़ कहलाते हैं।

❊ ❊

4 संधि

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) हिंदी में यौगिक शब्दों की रचना चार प्रकार से होती है।

(ख) रामावतार = राम + अवतार

(ग) संधि तीन प्रकार की होती है—
1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि,
3. विसर्ग संधि

(घ) स्वर संधि के पाँच उपभेद होते हैं—
(1) दीर्घ संधि, (2) गुण संधि,
(3) वृद्धि संधि, (4) यण संधि,
(5) अयादि संधि।

➡ आओ कुछ करें

1\. (क) (ii) नमः + कार
(ख) (ii) सु + आगत
(ग) (iii) विद्यालय

2\. (क) दुर्बल = दुः + बल
(ख) नीरोगी = निः + रोग
(ग) जगदीश = जगत् + ईश
(घ) पुस्तकालय = पुस्तक + आलय
(ङ) पवित्र = पो + इत्र
(च) महोत्सव = महा + उत्सव

3\. उज्ज्वल = उत् + ज्वल
सद्भावना = सत् + भावना
धर्मात्मा = धर्म + आत्मा
गणेश = गण + ईश
अत्यावश्यक = अति + आवश्यक

4\. रवि + इन्द्र = दीर्घ
यदि + अपि = यण
सुर + ईश = गुण
सु + आगत = यण

5\. (क) निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।
(ख) संधि करने और संधि-विच्छेद की क्रिया का ज्ञान होने पर बड़े व जटिल शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलती है।
(ग) जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हों तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि 'ओ' या 'औ' हों, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को वृद्धि संधि कहते हैं।
(घ) विसर्ग के बाद यदि 'श, ष' या 'स' हो, तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष् तथा स् हो जाता है; जैसे— दुः + शासन = दुश्शासन/दुःशासन।

6. (क) **व्यंजन संधि—** जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के प्रारंभ में कोई स्वर या व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि— परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में विसर्ग (:) और दूसरे शब्द के आरंभ में स्वर या व्यंजन से होने वाले मेल को विसर्ग संधि कहते हैं।

(ख) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हों, तो दोनों के स्थान पर 'ए'; यदि 'उ' या 'ऊ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि 'ऋ' हो तो 'अर्' हो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं। उदाहरण— (अ + इ = ए) देव + इन्द्र = देवेन्द्र

(ग) पहले वर्गीय वर्ण का तीसरे वर्गीय वर्ण में परिवर्तन— किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी स्वर या 'य', र, ल, व में से किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में बदल जाता है; जैसे— तत् + भव = तद्भव।

❊ ❊

5 समास

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) समास युक्त पद को समस्तपद कहते हैं।

(ख) समास के चार भेद होते हैं।

(ग) जिस समस्तपद में दो पद विशेषण हों, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

(घ) विग्रह करने पर समस्तपद के दो पद बन जाते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iii) माता-पिता
   (ख) (ii) बहुव्रीहि
   (ग) (iii) माता-पिता
   (घ) (ii) बहुव्रीहि

2.

	विग्रह	**समस्त पद**	**समास का नाम**
(क)	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	अव्ययीभाव
(ख)	महान है जो आत्मा	महात्मा	कर्मधारय
(ग)	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश	लंबोदर	बहुव्रीहि
(घ)	कमल के समान चरण	चरणकमल	कर्मधारय
(ङ)	गुण अथवा दोष	गुण और दोष	द्वंद्व
(च)	आठ आनों का समूह	अठन्नी	द्विगु

3.

(क)	करोड़पति	करोड़ों का पति (स्वामी)	संबंध तत्पुरुष
(ख)	पंचतत्व	पाँच तत्वों का समूह	द्विगु समास
(ग)	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	द्विगु समास
(घ)	दिन-रात	दिन और रात	द्वंद्व समास
(ङ)	महादेव	महान है जो देव	कर्मधारय समास
(च)	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में	अव्ययीभाव समास

4.

शब्द विग्रह	**समस्तपद**	**समास**
पाप और पुण्य	पाप–पुण्य	द्वंद्व समास
तीन फलों का समूह	त्रिफला	द्विगु समास
काली है जो मिर्च	कालीमिर्च	कर्मधारय समास
धन से हीन	धनहीन	अपादान तत्पुरुष समास
दोष से मुक्त	दोषमुक्त	अपादान तत्पुरुष समास
पति और पत्नी	पति–पत्नी	द्वंद्व समास
नरों का भक्षी	नरभक्षी	संबंध तत्पुरुष
दो राहों का समूह	दुराहा	द्विगु समास

5. (क) जिस सामासिक शब्द का दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहले पद के साथ लगी विभक्ति (को, से, के लिए, से (द्वारा), का, की, के, में, पर) का लोप हो जाता है, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

(ख) जिस समास में पूर्व पद 'गौण' तथा उत्तर पद 'प्रधान' हो तथा पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य या एक पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

(ग) जिस सामासिक पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो और किसी समूह का बोध कराता हो, वह द्विगु समास कहलाता है।

(घ) जिस समस्तपद का पहला पद प्रधान व अव्यय हो तथा उसके योग से सारा समस्तपद ही अव्यय बन जाए, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

6. (क) **तत्पुरुष समास के उपभेद—**

1. अलुक् तत्पुरुष — खे (गगन में) — चर — खेचर
2. नञ तत्पुरुष — न संभव — असंभव
3. मध्यमपदलोपी तत्पुरुष — वन में रहने वाला मानुष — वनमानुष
4. कर्मधारय समास — नीली है जो गाय — नीलगाय
5. द्विगु समास — तीन रंगों का — तिरंगा

(ख) **कर्मधारय और द्विगु समास में अंतर—** कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद गुणवाचक विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, परंतु द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।

(ग) **संधि और समास में अंतर—** संधि और समास दोनों यद्यपि 'मेल' करने की प्रकृति रखते हैं, परंतु दोनों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। दोनों में अंतर इस प्रकार है—

1. संधि में वर्णों का और समास में शब्दों का मेल होता है।
2. संधि में वर्णों के योग से परिवर्तन होता है, जबकि समास में दो या अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं।

❊ ❊

6 संज्ञा

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) संज्ञा के मुख्यतः पाँच भेद माने जाते हैं।

(ख) जातिवाचक संज्ञा का उदाहरण— बालक।

(ग) भाववाचक संज्ञाओं की रचना पाँच प्रकार से होती है।

(घ) भाववाचक संज्ञाओं को दो वर्गों में रखा जाता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) व्यक्तिवाचक
   (ख) (ii) पाँच
   (ग) (iv) घबराहट
   (घ) (i) सैनिक
   (ङ) (i) आगरा
2. (क) वह सौ मीटर की **दौड़** में प्रथम आया।
   (ख) बुद्धिमान **छात्र** अपनी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देते हैं।
   (ग) आगरा का **ताजमहल** बहुत प्रसिद्ध है।
   (घ) **दूध** से अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं।
   (ङ) सातवीं **कक्षा** में पैंतीस छात्राएँ हैं।
3.

उड़ना	उड़ान
चालाक	चालाकी
हरा	हरियाली
सजाना	सजावट
पढ़ना	पढ़ाई

4. (क) एकता ( )
   (ख) चतुर ( )
   (ग) प्रभुत्व ( )
   (घ) दूध ( )
   (ङ) गर्म ( )
   (च) बचपन ( )
5. (क) संज्ञा के भेदों के नाम—
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
   2. जातिवाचक संज्ञा
   3. भाववाचक संज्ञा
   4. समुदायवाचक संज्ञा
   5. द्रव्यवाचक संज्ञा

   (ख) जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाता है।
   (ग) वे शब्द जो किसी गुण, दशा, अवस्था या भाव का बोध कराएँ, 'भाववाचक संज्ञा' कहलाते हैं।
   (घ) जिन संज्ञा शब्दों से विभिन्न पदार्थों का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
6. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण अथवा भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।
   (ख) जिस संज्ञा शब्द से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; परंतु जिन संज्ञा शब्दों से विभिन्न पदार्थों का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा के बोधक शब्द निम्नलिखित हैं—
   (i) व्यक्तियों के नाम
   (ii) दिशाओं के नाम
   (iii) देशों के नाम
   (iv) पर्वतों के नाम
   (v) नदियों के नाम
   (vi) समुद्रों के नाम
   (vii) नगरों के नाम
   (viii) पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम
   (ix) दिनों व महीनों के नाम
   (x) ग्रहों व नक्षत्रों के नाम
   (xi) त्योहारों के नाम

❊ ❊

7 लिंग

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) 'लिंग' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है 'चिन्ह्' या 'निशान'।
(ख) लिंग के दो प्रकार हैं।
(ग) लिंग की पहचान का निर्णय प्राय: दो प्रकार से किया जाता है
   1. शब्द के अर्थ से तथा
   2. शब्द के रूप से।

(घ) बालक - बालिका

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) पुल्लिंग
   (ख) (ii) विद्वान
   (ग) (iii) कछुआ
2. (क) **ग्वालिन** भैंस का दूध दुह रही है।
   (ख) **छात्र** कक्षा में पढ़ रहे हैं।
   (ग) लक्ष्मीबाई महान **वीरांगना** थीं।
   (घ) यह **सड़क** बहुत लंबी है।
   (ङ) **कवि** काव्यपाठ कर रहा है।
   (च) आकाश में **चिड़िया** उड़ रही है।
3. (क) शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं।
   (ख) जो शब्द पुरुष-जाति का बोध कराते हैं, पुल्लिंग कहलाते हैं।
   (ग) जो शब्द स्त्री-जाति का बोध कराते हैं, स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
   (घ) नित्य स्त्रीलिंग शब्द हैं— नर्स, सती, धाय, सौत, सुहागिन, संतान, कोयल, चील, लोमड़ी, गिलहरी, दीमक, मैना, मक्खी, मछली, मकड़ी, छिपकली, भेड़, बुलबुल आदि।
   (ङ) नित्य पुल्लिंग शब्द हैं— तोता, कौआ, पक्षी, उल्लू, पशु, मच्छर, कीड़ा, भेड़िया, गेंडा, बाज, गरुड़, खरगोश, बिच्छू, चीता आदि शब्द पुल्लिंग माने जाते हैं।
4. (क)
   1. जिन शब्दों के अंत में 'अ' हो (अकारांत शब्द), वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं; जैसे— जंगल, खेल।
   2. प्राणियों में समुदाय या समूह का ज्ञान कराने वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे— संघ, कुटुंब।
   3. जिन शब्दों के अंत में 'पा', 'पन', 'आव', 'आवा' और 'न' होते हैं, वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं; जैसे— बुढ़ापा, बचपन।

   (ख) 1. ई, नी, री, त, ता, आई, इमा, आस, आवट, आहट आदि से समाप्त होने वाले शब्द प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे— नदी, पटरी।
   2. जिन संस्कृत संज्ञाओं के अंत में 'आ', 'ई' अथवा 'उ' हों, वे स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे— क्षमा, शांति।
   3. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे— गंगा, यमुना।

   (ख) 1. 'अ' को 'आ' करके— छात्र - छात्रा
   2. कुछ परिवर्तनों के साथ 'आ' को 'इया' करने से— बूढ़ा - बुढ़िया
   3. 'अक' के स्थान पर 'इका' कर देने से— लेखक - लेखिका

❊ ❊

8 वचन

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) वचन शब्द का मूल अर्थ है— कहना या बताना।
(ख) वचन दो प्रकार के होते हैं।
(ग) जनता व भीड़ आदि शब्द एकवचन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।
(घ) लू - लुएँ

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) तितलियाँ
   (ख) (iii) गाय
2. (क) बच्चा पतंग उड़ा रहा है।
   (ख) सैनिकों ने शत्रुओं पर आक्रमण किया।
   (ग) रेगिस्तान में ऊँट पर सवारी की जाती है।

(घ) क्यारियों में मिर्च के पौधे लगे हुए हैं।

3. (क) लता वृक्षों पर फैल गई है।

(ख) अपने शिष्यों के नाम बताओ।

(ग) विद्यालय में छात्र कक्षाओं में बैठे हैं।

(घ) अपूर्व ने बिल्ली और तोता पाल रखा है।

(ङ) गर्मियों में रात छोटी होती है।

(च) हर एक ने टोपियाँ पहन रखी हैं।

4. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

(ख) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

6. (क) संज्ञा या सर्वनाम की संख्या एक होती है या एक से अधिक। संख्या का यह रूप ही व्याकरण में 'वचन' कहलाता है।

(ख) 1. साधारणतः एक संख्या के लिए एकवचन तथा एक से अधिक संख्या के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है, परंतु कभी-कभी निम्नलिखित परिस्थितियों में शब्दों के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

1. किसी एक के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन रूप प्रयोग किया जाता है; जैसे— श्री राम बड़े वीर थे।

2. जिन संज्ञा शब्दों के साथ जाति, दल, सेना, समूह आदि प्रयुक्त होता है, उनका प्रयोग केवल एकवचन में ही किया जाता है; जैसे— छात्र-दल यहाँ बैठेगा।

(ग) 1. अकारांत पुल्लिंग शब्दों में अंतिम 'अ' को 'ए' कर दिया जाता है; जैसे— बेटा - बेटे, ताला - ताले।

2. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ दिया जाता है; जैसे— आँख - आँखें।

3. आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ दिया जाता है; जैसे— छात्रा-छात्राएँ।

4. इकारांत और ईकारांत शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर 'ई' का 'इ' कर दिया जाता है— नारी - नारियों, चाबी - चाबियाँ।

5. स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'या' को 'याँ' कर दिया जाता है; जैसे— चुहिया - चुहियाँ, कुटिया - कुटियाँ।

6. उकारांत, ऊकारांत और औकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' बढ़ा देते हैं तथा 'ऊ' का ह्रस्व 'उ' कर दिया जाता है; जैसे— लू - लुएँ,
वधू- वधुएँ।

❊ ❊

9 कारक

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) कर्ता कारक का विभक्ति-चिन्ह् 'ने' है।

(ख) कारक के भेदों की संख्या आठ है।

(ग) कर्ता कारक का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है— 1. परसर्ग सहित, और परसर्ग रहित।

(घ) कारकीय-चिन्ह्रों को विभक्तियाँ अथवा परसर्ग भी कहा जाता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iii) करण कारक

(ख) (iii) करण कारक

(ग) (iii) संप्रदान कारक

(घ) (iii) अपादान कारक
(ङ) (iv) संबंध कारक

2. (क) टेबल **पर** पुस्तकें किसने रखी हैं?
(ख) **हे** ईश्वर! ये आपने क्या कर दिया।
(ग) सुमन ने माँ **के लिए** साड़ी खरीदी।
(घ) रोहन **का** पेन कहीं खो गया है।
(ङ) मोहन **को** बहुत तेज बुखार है।
(च) रवि कार होते हुए भी मेट्रो **से** ऑफिस जाता है।
(छ) मुझ**से** यह काम नहीं हो पा रहा है।

3. (क) हिन्दी में कारकों की संख्या दस है। (×)
(ख) क्रिया को करने वाला कर्ता कारक कहलाता है। (✓)
(ग) कारक चिह्न विभक्ति या परसर्ग कहे जाते हैं। (✓)
(घ) संबंध कारक का चिन्ह् 'के लिए' है। (×)
(ङ) संबोधन कारक के चिन्ह् 'हे', 'ओ', 'अरे' आदि हैं। (✓)

4. (क) उसने **पेंसिल** से एक चित्र बनाया।
(ख) राजा ने गरीबों को कंबल दिए।
(ग) भारत की नारी महान है।
(घ) पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
(ङ) मेज पर पुस्तक रख दो।
(च) हाथ से छड़ी गिर गई।
(छ) हमारा गाँव दूर है।
(ज) नाव नदी में डूब गई।
(झ) वह घर में है।

5. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।
(ख) कारक के भेदों के नाम हैं—
(i) कर्ता कारक
(ii) कर्म कारक
(iii) करण कारक
(iv) सम्प्रदान कारक
(v) अपादान कारक
(vi) संबंध कारक
(vii) अधिकरण कारक
(viii) संबोधन कारक
(ग) क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है।
(घ) **करण कारक और अपादान कारक में अंतर—** करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिन्ह् 'से' है, परंतु करण कारक में 'से' किसी साधन से काम करने का सूचक होता है, जबकि अपादान कारक में 'से' अलग होने का सूचक होता है।
पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान कारक)
मैं पेन से लिखता हूँ। (करण कारक)

6. (क)

कारक	**कारक चिह्न**
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, के द्वारा
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
संबंध	का, की, के
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे!, भो!, अरे!

(ख) परसर्ग सहित और परसर्ग रहित कारकों के उदाहरण

1. कर्ता कारक—	परसर्ग सहित — बालक ने पत्र लिखा।	
	परसर्ग रहित — बालक पत्र लिखता है।	
2. कर्म कारक —	परसर्ग सहित —पेड़ को मत काटो।	
	परसर्ग रहित — उसने पेड़ काटा।	
3. करण कारक	परसर्ग सहित — माली चाकू से फल काटता है।	
	परसर्ग रहित — मैंने कानों सुनी बात कही।	

4. संप्रदान कारक — परसर्ग सहित — गोपाल को दूध दो।
परसर्ग रहित — X
5. अपादान कारक — परसर्ग सहित — गोपाल छत से कूद गया।
परसर्ग रहित — X
6. संबंध कारक — परसर्ग सहित — यह मेरा घर है।
परसर्ग रहित — X
7. अधिकरण कारक — परसर्ग सहित — वह छत पर बैठा है।
परसर्ग रहित — X
8. संबोधन कारक — परसर्ग सहित — हे भगवान्! मुझे बचाओ।
परसर्ग रहित — X

(ग) **बालक के रूप**

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से, के द्वारा	बालकों से, के द्वारा
संप्रदान	बालक को, के लिए	बालकों को, के लिए
अपादान	बालक से (पृथक्)	बालकों से (पृथक्)
संबंध	बालक का, की, के	बालकों का, की, के
अधिकरण	बालक में, पर	बालकों में, पर
संबोधन	हे बालक!	हे बालको!

❊ ❊

10 सर्वनाम

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) सर्वनाम के छह भेद हैं।
(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं।
(ग) निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण
(घ) सर्वनामों में संबोधन कारक नहीं होता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) अनिश्चयवाचक
(ख) (ii) अपने आप
(ग) (i) जो, वह
(घ) (iii) यह
(ङ) (ii) तीन
2. (क) मैंने कल अमन और **उसकी** बहन को खाने पर बुलाया।
(ख) **जिन्हें** आना चाहिए था, वे नहीं आए।
(ग) रोहन रोता है **उसे** चॉकलेट चाहिए।
(घ) यह **किसकी** पुस्तक है?
(ङ) **तुममें** भी कोई बुराई नहीं है।
(च) **हमने** आम खाए।
(छ) तुम **किससे** मिलने गए थे?
3. (क) पुरुषवाचक— वह, जो (गलत शब्द 'जो' है।)
(ख) प्रश्नवाचक— कौन, तुझे, कोई, वे (गलत शब्द 'तुझे, वे, कोई' है।)
(ग) निजवाचक— तुम, आप, स्वयं, वे (गलत शब्द 'तुम, आप, वे' है।)
(घ) संबंधवाचक— आप, जैसा, वैसा, जिसकी, कुछ (गलत शब्द 'आप, कुछ' है।)

(ङ) निश्चयवाचक— यह, मेरा, तेरा, वह, वे (गलत शब्द 'मेरा, तेरा' है।)

4. (क) वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के भेदों के नाम निम्नलिखित हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

(ग) जो सर्वनाम किसी प्राणी या वस्तु के विषय में प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होता है, वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।

(घ) जो सर्वनाम तीनों पुरुषों में निजत्व (अपने आप) का बोध कराते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5. (क) **उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष का अंतर—** बोलने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जबकि जिससे बात की जाती है या जिसके विषय में कुछ लिखा जाता है अथवा जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाता है, उसके नाम के बदले प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) मैं — संप्रदान कारक — मुझको, मुझे, मेरे लिए
संबंध कारक — मेरा, मेरी, मेरे

(ग) उदाहरण
तुमने पत्र लिखा । राम ने पत्र लिखा ।
तुमने पत्र लिखा । मीरा ने पत्र लिखा ।

❊ ❊

11 विशेषण

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) विशेषता के आधार पर विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं।

(ख) संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं।

(ग) तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

(घ) जो शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) सुन्दर,
(ख) (iii) सैकड़ों,
(ग) (i) दो मीटर,
(घ) (iii) नई,
(ङ) (ii) पाँच

2. (क) चित्तौड़गढ़ एक **ऐतिहासिक** स्थान है।
(ख) **अपराधी** लोगों को कठोर दंड मिलना चाहिए।
(ग) घर के **भीतरी** हिस्से में एक मंदिर है।
(घ) सभी क्षेत्रों में भारतीय लोग अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं।
(ङ) **यह** काम कोई वीर पुरुष ही कर सकता है।

3.

विशेषण	**विशेष्य**
ऊँची दीवार	
लाल झंडा	
दो	किताबें
बाहरी हिस्सा	
पढ़ाकू बालक	
सुगंधित	पुष्प

4. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, दशा, अवस्था, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(ख) जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(ग) विशेषण की उत्तमावस्था में दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है; जैसे— गगन सबसे अच्छा लड़का है।

(घ) कुछ शब्दों जैसे— संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाकर विशेषणों की रचना की जाती है। ऐसे विशेषण यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— वर्ष से वार्षिक।

5. (क) संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं

(i) **निश्चित संख्यावाचक—** इन विशेषणों से व्यक्तियों या वस्तुओं की निश्चित संख्या का बोध होता है; जैसे— एक, दो, दूसरा, तिगुना।

(ii) **अनिश्चित संख्यावाचक—** इन विशेषणों से व्यक्तियों या वस्तुओं की निश्चित संख्या का बोध नहीं होता है; जैसे— कई लोग, अनेक वृक्ष।

(ख) **परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषणों में अंतर—**

यदि विशेषण गिनी जाने वाली वस्तु के साथ प्रयुक्त हुआ हो, तो उसके साथ प्रयुक्त विशेषण संख्यावाचक माना जाता है, अन्यथा इसे परिमाणवाचक विशेषण माना जाता है। उदाहरण—

संख्यावाचक	**परिमाणवाचक विशेषण**
1. मैंने चार केले खाए।	1. मैंने कुछ लीटर तेल लिया।
2. दो बच्चे खेलने गए हैं।	2. थोड़े चावल लाया हूँ।

(ग) विशेषण की अवस्थाओं में अंतर—

विशेषण की मूलावस्था में किसी व्यक्ति या वस्तु की सामान्य विशेषताएँ बताई जाती हैं। उत्तरावस्था में दो व्यक्तियों या वस्तुओं की परस्पर तुलना में एक की अधिकता तथा दूसरे की न्यूनता पाई जाती है एवं इसमें दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है। उदाहरण के लिए

मूलावस्था— गरिमा लंबी है।

उत्तरावस्था— गरिमा सरिता से अधिक लंबी है।

उत्तमावस्था— गगन सबसे अच्छा लड़का है।

❊ ❊

12 क्रिया

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) क्रिया का मूल धातु है।

(ख) क्रियाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है।

(ग) क्रियाओं के वर्गीकरण के दो आधार माने जाते हैं।

(घ) संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण में पाँच कारणों से परिवर्तन होता है—

(i) लिंग के कारण, (ii)वचन के कारण, (iii) पुरुष के कारण, (iv) काल के कारण, (v) वाच्य के कारण।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) क्रिया

(ख) (iii) अकर्मक क्रिया

(ग) (i) प्रेरणार्थक क्रिया

(घ) (iii) दो

2. (क) आय **घटी**।

(ख) गलती **हुई**।

(ग) चाय **पी**।
(घ) खोज **हुई**।
(ङ) मार **पड़ी**।
(च) लालच **हुआ**।

3. (क) पिता ने पुत्र से संदेश **भिजवाया**।
(ख) हम हलवाई से लड्डू **बनवाते** हैं।
(ग) लता ने गोपाल से पत्र **पढ़वाया**।
(घ) मैंने पेड़ **कटवा** दिया है।

4. (क) जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।
(ख) जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं।
(ग) जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे— बच्चा सोता है।
(घ) जब पहली क्रिया के तुरंत बाद मुख्य क्रिया होती है, तो पहली क्रिया को तात्कालिक क्रिया कहते हैं।

5. (क) जिन सकर्मक क्रियाओं में एक ही कर्म होता है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं; जबकि जिन सकर्मक क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ख) वाक्य में जहाँ केवल एक क्रिया का प्रयोग हो, वह सामान्य क्रिया कहलाती है जबकि जहाँ दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो, वह संयुक्त क्रिया कहलाती है।
(ग) पुरुष तीन प्रकार के होते हैं—
(i) उत्तम पुरुष (ii) मध्यम पुरुष
(iii) अन्य पुरुष।
(घ) क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है—

1. **कर्तरि प्रयोग—** जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता है; जैसे— बच्चा फूल तोड़ता है।
2. **कर्मणि प्रयोग—** जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्मणि प्रयोग होता है; जैसे— श्वेता ने गीत गाया।
3. **भावे प्रयोग—** जब क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं होते तथा क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में होती है, तब क्रिया के इस प्रयोग को भावे प्रयोग कहते हैं; जैसे—मीरा से गाया जाता है।

❊ ❊

13 काल

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) भूतकाल के छह भेद होते हैं।
(ख) काल को तीन भागों में बाँटा जाता है।
(ग) वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं।
(घ) भविष्यत काल के दो भेद होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii)भूतकाल
(ख) (i) तीन

2. (क) क्रिया का वह रूप जिसमें बीते समय में कार्य के होने के बारे में संदेह हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।
(ख) वह काल जिससे आने वाले समय का बोध हो, भविष्यत् काल कहलाता है।
(ग) भविष्यत् काल का वह रूप जिसमें होने वाले कार्य की संभावना प्रकट हो, संभाव्य भविष्यत् काल कहलाता है।

3.

वाक्य	काल
(क) सभी ग्वाल-बाल गेंद खेल रहे थे।	अपूर्ण भूतकाल
(ख) नौकर आया होगा।	संदिग्ध वर्तमान काल
(ग) सुरेश आ रहा होगा।	संदिग्ध वर्तमान काल
(घ) गुप्ता जी चले गए।	पूर्ण भूतकाल
(ङ) यदि वह परिश्रम करता, तो सफल हो जाता।	हेतुहेतुमद् भूतकाल
(च) सूरज गया।	सामान्य भूतकाल
(छ) शायद आज वर्षा हो।	संभाव्य भविष्यत् काल
(ज) वह शीघ्र ही घर लौटेगा।	सामान्य भविष्यत् काल
(झ) मैं भी शायद लौटूँ।	संभाव्य भविष्यत् काल
(ञ) मार्ग में पत्थर न होता, तो श्याम को चोट न लगती।	हेतुहेतुमद् भूतकाल

4. (क) क्रिया के रूप से कार्य के करने, होने या न होने के समय का बोध होता है। इस समय को ही व्याकरण में काल कहते हैं।
   (ख) क्रिया के जिस रूप से उसका बीते समय में होना प्रकट हो, उसे भूतकाल कहते हैं।
   (ग) जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
   (घ) क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, वह भविष्यत् काल कहलाता है।

5. (क) काल के तीन प्रकार होते हैं—
   (i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल
   (iii) भविष्यत् काल।
   (ख) पूर्ण भूत— रेलगाड़ी आ चुकी थी।
   अपूर्ण भूत— श्वेता पाठ याद कर रही थी।
   (ग) क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले समय में कार्य के सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं, जबकि जब आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाए, तब संभाव्य भविष्यत् काल होता है।

❊ ❊

14 वाक्य विचार

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) वाक्य के छह अनिवार्य तत्व माने जाते हैं।
(ख) वाक्य के प्रमुख रूप से दो अंग होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) एक उद्देश्य और एक विधेय
   (ख) (iii) दो या दो से अधिक प्रधान उपवाक्यों से
   (ग) (iv) 'मेघदूत' की रचना की है।
   (घ) (iii) हम कल मुम्बई जा रहे हैं।
   (ङ) (iii) राम जाओ।

2. (क) पापा मेरे लिए चॉकलेट **तथा** उपहार लाए।
   (ख) तुम करो **या** मैं बात एक ही है।
   (ग) प्रश्न संख्या पाँच **अथवा** छह का उत्तर दीजिए।
   (घ) इंजीनियर को बुलाया **परंतु** वह नहीं आया।

3. (क) दर्जी कपड़े सीता है।   सरल वाक्य
   (ख) झूठ बोलना महापाप है।   सरल वाक्य

4. (क) सार्थक शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है।
   (ख) वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार अथवा जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।
5. (क) **सार्थकता—** सार्थक शब्दों का प्रयोग वाक्य की प्रथम आवश्यकता होती है। निरर्थक शब्दों का समूह वाक्य संरचना नहीं कर सकता। ऐसे शब्द वाक्य में सार्थक शब्दों के साथ तभी प्रयोग किए जा सकते हैं, जब वे भी कुछ अर्थ दें।
   योग्यता— शब्द के सार्थक होने के साथ प्रसंग के अनुसार अर्थ देने की योग्यता रखते हों।
   (ख) **उद्देश्य—** वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार अथवा जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं; जबकि वाक्य में कर्ता या उद्देश्य के बारे में जो कुछ भी कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं— जैसे—

सविता	गीत गा रही है।
उद्देश्य	विधेय

❊ ❊

15 शब्द भंडार

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) ऐसे शब्द जिन्हें ऊपर से देखने पर सामान्यत: उनके अर्थ में कोई अंतर दिखाई नहीं देता, किंतु उनके गूढ़ार्थों पर दृष्टि डालने से एकार्थक शब्द स्पष्ट हो जाते हैं।

(ख) ऐसे शब्द जो उच्चारण की दृष्टि से प्राय: समान पाए जाते हैं, परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त भिन्नता होती है, समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

(ग) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

(घ) जो शब्द परस्पर विपरीत अर्थ प्रकट करें, वे विलोम शब्द कहलाते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) अनल
   (ख) (iii) व्यय
   (ग) (ii) तीर
   (घ) (i) अमर
   (ङ) (i) दिवस – गरीब
2. (क) इस अस्पताल से सभी रोगी **स्वस्थ** होकर जाते हैं।
   (ख) मेरी चाची पुराना सामान बेचकर **नया** खरीद लेती है।
   (ग) सवेरे अंधकार दूर होता है और **प्रकाश** छा जाता है।
   (घ) विद्यालय में आज गुरुओं और **शिष्यों** के बीच फुटबॉल मैच हुआ।
   (ङ) वीर पुरुष विजयी होते हैं और **कायर** हार जाते हैं।
   (च) इस कक्षा में आठ विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हुए हैं, शेष बाईस **उत्तीर्ण** हुए हैं।
3.

पत्र	पत्ता
फल	नतीजा
घन	हथौड़ा
घट	कम
गुण	स्वभाव
कनक	धतूरा
चपला	लक्ष्मी
अज	बकरा

4. (क) अक्षर
   - वर्ण— बालक अभी अक्षर लिखना सीख रहा है।
   - अविनाशी— ईश्वर अविनाशी है।

   (ख) पत्र
   - पत्ता— छोटे बच्चों को पत्र एकत्र करना अच्छा लगता है।
   - पत्र— मैंने अपने मित्र को पत्र लिखा।

   (ग) मंगल
   - (एक ग्रह)— हमारा एक यान मंगल ग्रह पर उतरा।
   - (अच्छा)— ईश्वर की कृपा से अब सब मंगल है।

   (घ) कुल
   - (जोड़)— एक और एक कुल दो होते हैं।
   - (वंश)— उसका कुल शहर का सबसे इज्जतदार व्यक्ति है।

5. (क) चित्र बनाने वाला— चित्रकार
   (ख) दूसरों का उपकार करने वाला— परोपकारी
   (ग) जिसका अंत न हो — अनंत
   (घ) जिसे दिखाई न देता हो — अंधा

6. (क चिर - लंबा— वह चिर काल से तपस्या कर रहा है।
   चीर - कपड़ा— रेशम से तैयार चीर बहुत सुंदर होता है।
   (ख) पास - निकट— मेरा विद्यालय मेरे घर के पास ही है।
   पाश - रस्सी— पहले जमाने में कैदियों को पाश से बाँधकर रखा जाता था।
   (ग) परिणाम - नतीजा— आज हाईस्कूल का परिणाम घोषित होगा।
   परिमाण - मात्रा— यह अनाज परिमाण में बहुत कम लग रहा है।
   (घ) प्रसाद - ईश्वर का भोग— आज भजन के बाद प्रसाद वितरण भी होगा।
   प्रासाद - महल— राजा प्रासाद में रहते थे।

7. (क) भूल— इस कार्य में भूल की कोई संभावना नहीं है।
   त्रुटि— इस प्रश्न के उत्तर में अनेक त्रुटियाँ हैं।
   (ख) निवेदन— मेरा आपसे निवेदन है कि आप जल्द से जल्द उनसे मिलने जाएँ।
   आवेदन— रमेश ने कल ही नौकरी के लिए आवेदन किया।
   (ग) अपराध— राजा गंभीर अपराध में जेल गया है।
   पाप— हमें पाप करने से बचना चाहिए।
   (घ) कार्य— राधिका अपने सभी कार्य बहुत ईमानदारी से करती है।
   कर्तव्य— हमें अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए।

8. (क) कानून तोड़ना **अपराध** है।
   (ख) उसने **हिम्मत** करके चोर को पकड़ लिया।
   (ग) भोजन, वस्त्र और मकान जीवन के लिए **आवश्यक** हैं।
   (घ) बार-बार प्रयत्न करने पर भी वह परीक्षा में **असफल** रहा।

9. (क) काम से जी चुराने वाला— कामचोर
   (ख) भाषण देने वाला—वक्ता
   (ग) जिस पर किसी का नियंत्रण न हो— अनियंत्रित
   (घ) गाय-भैंस चराने वाला—चरवाहा
   (ङ) आकाश में उड़ने वाला—नभचर
   (च) भोजन बनाने के लिए स्थान—रसोईघर

(छ) देवता के लिए बनाया गया भवन— मंदिर

10. (क) पर्यायवाची शब्द उन शब्दों को कहा जाता है, जिनका अर्थ समान या बहुत मिलता-जुलता होता है।

(ख) पर्यायवाची शब्द अलग-अलग होते हैं किंतु उनका अर्थ एक ही होता है, जबकि अनेकार्थी शब्द एक ही होता है लेकिन संदर्भ के अनुसार उसके अनेक अर्थ निकलते हैं।

(ग) वे शब्द, जो एक-दूसरे के विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं; जैसे—
दिन - रात, ऊँचा - नीचा,
मोटा - पतला

(घ) 'सुत' और 'सूत' समश्रुति भिन्नार्थक शब्द हैं।

(ङ) 'गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति'— चलाकर (ड्राइवर)

❋ ❋

16 उपसर्ग एवं प्रत्यय

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) 'निर्धारित' = निर् (निः) + धारित

(ख) 'परा' = परा + जय = पराजय

(ग) हिंदी में प्रयुक्त संस्कृत उपसर्गों की संख्या 22 है।

(घ) बिकाऊ = बिक + आऊ

(ङ) घबराहट = घबरा + आहट

(च) प्रत्यय शब्द के पीछे लगाया जाता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) अपमान
   (ख) (iv) यह सभी
   (ग) (iii) अनजान
   (घ) (i) क्रिया में
   (ङ) (i) दो
   (च) (i) धातु में

2. (क) निपुण = नि + पुण
   (ख) अमान्य = अ + मान्य
   (ग) अत्याचार = अति + आचार
   (घ) अज्ञान = अ + ज्ञान
   (ङ) कमजोर = कम + जोर
   (च) प्रताप = प्र + ताप
   (छ) सहपाठी = सह + पाठी
   (ज) निबंध = नि + बंध
   (झ) बाइज्जत = बा + इज्जत
   (ञ) परिवहन = परि + वहन
   (ट) समुचित = सम् + उचित
   (ठ) अवमानना = अव + मानना

3.

	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(i)	निपुण	= निपुण	....
(ii)	अमान्य	= मान्य	....
(iii)	भुलक्कड़	= भूल	+ अक्कड़
(iv)	लड़ाका	= लड़	+ आका
(v)	लड़ाकू	= लड़	+ आकू
(vi)	दयालु	= दया	+ आलु
(vii)	चढ़ावा	= चढ़	+ आवा
(viii)	लुटेरा	= लूट	+ ऐरा
(ix)	बोली	= बोल	+ ई
(x)	पालनहार	= पालन	+ हार

4.

प्रत्यय		नए शब्द
लड़ाकू	=	....
दयालु	=	....
आलु	=	दयालु, कृपालु
आहट	=	घबराहट, झनझनाहट
हार	=	होनहार, खेवनहार
एरा	=	ममेरा, सपेरा
तम	=	अधिकतम, लघुतम
आवट	=	सजावट, लिखावट

अक = लेखक, गायक
आन = लगान, उड़ान

5. दिख + आवा = दिखावा
अच्छा + ई = अच्छाई
हँस + ना = हँसना
लोहा + आर = लोहार
पढ़ + आई = पढ़ाई
मोटा + आपा = मोटापा
भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़
चोर + ई = चोरी
फूल + दान = फूलदान
चार + इत = चारित

6.

शब्द	उपसर्ग	नया शब्द	उपसर्ग का नाम
देसी (देशी)	वि	विदेशी	संस्कृत उपसर्ग
पता	ला	लापता	उर्दू-फारसी उपसर्ग
होनी	अन	अनहोनी	हिंदी उपसर्ग
जय	परा	पराजय	संस्कृत उपसर्ग
लोक	पर	परलोक	हिंदी/संस्कृत उपसर्ग
मान	अप	अपमान	संस्कृत उपसर्ग

7. (क) जो शब्दांश किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उनको उपसर्ग कहा जाता है; जैसे— अति, अनु।
अति + अधिक = अत्यधिक
अनु + चर = अनुचर

(ख) उपसर्ग के निम्नलिखित भेद होते हैं
1. संस्कृत उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू-फारसी के उपसर्ग
4. संस्कृत अव्यय जिनका उपसर्ग के रूप में प्रयोग होता है।

(ग) वे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे— आऊ, एलू।
बिका + आऊ = बिकाऊ
घर + एलू = घरेलू

(घ) प्रत्यय के दो मुख्य भेद होते हैं—
1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

❊ ❊

17 अव्यय

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारक, काल आदि के अनुसार नहीं बदलते, वे अव्यय शब्द कहे जाते हैं।

(ख) अव्यय के चार भेद होते हैं—
1. क्रिया-विशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) चार
(ख) (i) निकट
(ग) (ii) विस्मयादिबोधक
(घ) (iii) के पास
(ङ) (i) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

2. (क) वह **नियमपूर्वक** टहलने जाते हैं।
(ख) नीरज की बहिन **कम** बोलती है।
(ग) किताबों को **इधर-उधर** मत फेंको।
(घ) माँ आज **भीतर** सो रही है।
(ङ) शिवम् **परसों** जाएगा।

3. (क) वह **धीरे से** मुस्कुराया।
   (ख) तुम सूरत **कब** जाओगे?
   (ग) **अचानक** आँधी चलने लगी।
   (घ) शुभम का कुत्ता **बहुत** भौंकता है।
   (ङ) मयंक **प्रतिदिन** योग करता है।
   (च) गाड़ी **पास** आती जा रही है।
4. (क) छत से झाँक कर देखो।
   (ख) भगवत को पकड़कर लाओ।
   (ग) भावेश दो घंटे से **वहाँ** बैठा है।
   (घ) राजभवन के **ऊपर** तिरंगा फहरा रहा है।
   (ङ) मनीष के पास **कीमती** घड़ी है।
   (च) प्यास के **मारे** गला सूख रहा है।
   (छ) **जितना** पढ़ोगे **उतना** बढ़ोगे।
5. (क) और– सीता और गीता गाना गाती हैं।
   (ख) क्योंकि– राघव अपनी कक्षा में प्रथम आया क्योंकि उसने कठिन परिश्रम किया था।
   (ग) परंतु– भावेश यहाँ आया तो था परंतु मुझसे नहीं मिला।
   (घ) इसलिए– उसे मैनेजर साहब से मिलना था इसलिए वह ऑफिस गया था।
   (ङ) अथवा– प्रश्न संख्या छह अथवा सात का उत्तर लिखें।
   (च) अत:– संसार कर्मक्षेत्र है अत: कर्म ही धर्म है।
   (छ) लेकिन– लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होता है लेकिन मुहावरा एक वाक्य खंड होती है।
6. (क) हाय! = हाय! यह कितना सुंदर बालक है।
   (ख) अरे! = अरे! तुम इतना दुखी क्यों हो?
   (ग) छि:! = छि:! यह कितना गंदा है।
   (घ) अहा! = अहा! आज तो भोजन करके आनंद आ गया।
   (ङ) वाह! = वाह! कितना मनोहर **'य'** है।
   (च) ओह! = ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ।
   (छ) बचो! = बचो! वहाँ एक पागल कुत्ता है।
7. (क) हे राम! – शोक / दु:ख / निराशा / विवशता
   (ख) हाय! – शोक / वेदना / कष्ट / दु:ख
   (ग) बाप रे! – भय / आश्चर्य / अचंभा
   (घ) ओ! – संबोधन / आश्चर्य / ध्यान खींचना
   (ङ) जीते रहो! – आशीर्वाद / प्रसन्नता
   (च) भागो! – चेतावनी / भय / आदेश
   (छ) छि:! – घृणा / घिन / तिरस्कार
   (ज) ठीक! – अनुमोदन / सहमति / स्वीकृति
8. (क) जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।
   (ख) जो अव्यय शब्द क्रिया के होने का काल बताते हैं, उनको कालवाचक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। जैसे– वह कल आएगा।
   (ग) विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताता है, किंतु क्रिया-विशेषण क्रिया की विशेषता के बारे में बताता है। जैसे– ऊँचा मकान बन रहा है। (विशेषण) विमान ऊँचा उड़ रहा है। (क्रिया-विशेषण)
   (घ) जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहा जाता है। उदाहरण– मेरे घर के बगल में एक तालाब है।

❊ ❊

18 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीतिकराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए, उसे 'मुहावरा' कहते हैं।

(ख) लोकोक्ति का अर्थ है— लोक में प्रचलित उक्ति।

(ग) **मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर—**

1. मुहावरा वाक्य खंड होता है, जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है।
2. मुहावरे वाक्य के बीच में प्रयोग किए जाते हैं; अत: वाक्य का अंग बन जाते हैं। लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में उदाहरणस्वरूप किया जाता है।
3. पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जबकि मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) इन्कार करना
   (ख) (ii) मूर्ख को उपदेश देना
   (ग) (iii) क्रोधित होना
   (घ) (iv) कोरा बाहरी दिखावा
   (ङ) (ii) अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता
2. (क) मुँह में पानी भर आना—जी ललचाना या लालच आना।
   (ख) लम्बी हाँकना— बहुत ज्यादा डींग मारना या बढ़-चढ़कर बातें करना।
   (ग) हाथ मलना— पछताना या पछतावा होना।
   (घ) दिल छोटा करना— दुखी या निराश होना।
   (ङ) जहर का घूँट पीना— अपमान सहन करना।
   (च) टेढ़ी उंगली से घी निकालना— चालाकी से अपना काम सिद्ध कर लेना।
   (छ) टस से मस न होना— अपनी बात पर अडिग रहना।
3. (क) हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और— कथनी और करनी में अंतर।
   (ख) मुँह में राम बगल में छुरी— कपटी व्यक्ति।
   (ग) पाँचों उँगली घी में होना— हर प्रकार से लाभ ही लाभ होना।
   (घ) बावरे गाँव में ऊँट आना— अज्ञानियों के बीच ज्ञानियों का आना।
   (ङ) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे— अपना अपराध स्वीकार न करके पूछने वाले पर दोष मढ़ना।
   (च) ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना— कठिन काम शुरू करने पर आने वाली बाधाओं से न घबराना।
   (छ) अंधा पीसे कुत्ता खाए— मेहनत कोई और करे और लाभ कोई और उठाए।
4. (क) फूला न समाना— अत्यधिक प्रसन्न होना।
   (ख) एक पंथ दो काज— दोहरा लाभ।
   (ग) नाच न जाने आँगन टेढ़ा— स्वयं की कमी को दूसरे पर मढ़ना।
   (घ) उल्लू बनाना— मूर्ख बनाना।
   (ङ) खोदा पहाड़ निकली चुहिया— मेहनत ज्यादा फल कम।
   (च) ऊँची दुकान फीका पकवान— नाम बड़ा काम छोटा।
   (छ) नौ दो ग्यारह होना— भाग जाना।
5. (क) छोटी-छोटी बातों पर **आँख दिखाना**।
   (ख) वह तुम्हारी बस में आने वाला नहीं। वह तो उड़ती चिड़िया **के पंख गिन लेता है**।
   (ग) वह अखबार भी नहीं पढ़ सकता। उसके लिए तो **काला अक्षर भैंस बराबर है।**
   (घ) शिवाजी ने मुगलों की ईंट से ईंट बजा दी थी।

❊ ❊

19 विराम चिह्न

➡ **आओ कुछ बताएँ**

(क) वाक्य के पूर्ण होने से पूर्व रुकने तथा संज्ञा, सर्वनाम शब्दों को अलग करने के लिए अल्पविराम चिÊ ¶ का प्रयोग किया जाता है।

(ख) विराम का अर्थ है– रुकना या ठहरना। विराम-चि□ों के प्रयोग से बात स्पष्ट होने में सहायता मिलती है।

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (iv) पूर्ण विराम
   (ख) (ii)-
   (ग) (iii) वह बिस्कुट, नमकीन और मिठाई लेने गया है।
   (घ) (iv) ∧
   (ङ) (iv) रुकना
2. (क) उद्धरण चिन्ह्**दो** प्रकार के होते हैं।
   (ख) सामान्यत: वाक्य या कथन की समाप्ति पर **पूर्ण विराम** चिन्ह्प्रयोग करते हैं।
   (ग) कथन को स्पष्ट करने या विवरण देने के लिए **उद्धरण** चिन्ह्प्रयोग करते हैं।
   (घ) लिखने से कुछ छूट जाए तो वहाँ **हंसपद** चिन्ह्प्रयोग किया जाता है।
3. (क) , अल्प विराम
   (ख) । पूर्ण विराम
   (ग) ? प्रश्नवाचक चिन्ह्
   (घ) ‘‘ ’’ उद्धरण चिन्ह्
   (ङ) ∧ त्रुटिपूरक चि□
4 (क) प्रश्न सूचक चि□– क्या तुम उस लड़की को जानते हो?
   (ख) विस्मयादिबोधक चि□– अरे! वहाँ क्या हो रहा है।
   (ग) उद्धरण चि□– गाँधीजी ने नारा दिया– ‘करो या मरो।’
   (घ) निर्देशक चिन्ह्व्यक्ति के जीवन के दो ही लक्ष्य होने चाहिए– सत्य एवं अहिंसा।
   (ङ) लाघव चिन्ह्– कृ० प० प० – (कृपया पन्ना पलटिए)
5. (क) “ ” = दुहरा उद्धरण चि□
   (ख) ? = प्रश्न सूचक चिन्ह्
   (ग) ० = लाघव चि□
   (घ) – = योजक चिन्ह्
   (ङ) ‘ ’ = इकहरा उद्धरण चि□
   (च) ! = विस्मयादिबोधक चि□
   (छ) , = अल्पविराम
   (ज) । = पूर्णविराम
6. (क) (i) छि-छि! यह कितना गंदा स्थान है।
   (ii) हे ईश्वर! उसे यह कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करना।
7. (ख) इसका प्रयोग दो विपरीतार्थक शब्दों के मध्य किया जाता है।
   (ग) प्रश्न पूछने के लिए ‘‘प्रश्नवाचक चिन्ह्(?)’’ का प्रयोग किया जाता है।
   (घ) अपनी बात लिखकर समझाने के लिए ‘‘विराम-चि□ों’’ का प्रयोग किया जाता है।

20 अपठित बोध

❊ ❊

1. (क) **उचित शीर्षक**– अनुशासन का महत्व
   (ख) अनुशासन के महत्व को समझने वाला, जीवन के प्रत्येक क्षण को अमूल्य समझने वाला और ज्ञान प्राप्ति के लिए सदैव उत्सुक रहने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन को सफल बना सकता है।
   (ग) **सारांश** - अनुशासन जीवन के लिए

उतना ही आवश्यक है जितना भोजन और पानी। यह मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ-साथ व्यवहार में सरलता और सौम्यता लाता है। अनुशासित व्यक्ति अपने उच्च आदर्शों को प्राप्त कर जीवन में उन्नति करता है और स्वस्थ, सबल व बुद्धिमान बना रहता है।

2. (क) **उचित शीर्षक** - 'वीरभूमि राजस्थान'

(ख) राजस्थान को वीरों की भूमि इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहाँ समय-समय पर ऐसे वीर पैदा हुए थे, जिन्होंने अपने देश का गौरव बढ़ाया और इसके लिए अपने प्राण न्योछावर किए।

(ग) राजस्थान वीरों की भूमि रही है। महाराणा प्रताप ने असहनीय कष्ट उठाकर इसकी रक्षा की। पन्ना का त्याग विश्व प्रसिद्ध है। पद्मिनी का जौहर भी राजस्थानी शौर्य का परिचायक है। इस प्रकार राजस्थान में वीर पुरुषों के साथ-साथ वीरांगना नारियों ने भी जन्म लिया।

अपठित पद्यांश

1. (क) **उचित शीर्षक** - नदी की उमंग

(ख) नदी गर्मी में पतली रेखा बन जाती है, लेकिन बारिश आने पर उमंग से भर जाती है, जबकि मनुष्य पल-पल बदलता रहता है।

(ग) गर्मी में नदी एक पतली रेखा के समान होती है, लेकिन बरसात में बादल आने और पानी बरसने पर वह उमंग के साथ बहने लगती है।

2. (क) **उचित शीर्षक** - मानवता

(ख) कवि को अपनी मानवता पर बहुत अभिमान है।

(ग) कवि हमें सिखाना चाहता है कि जियो और जीने दो और जितना हो सके उतना प्यार बाँटो।

21 पत्र लेखन

✲ ✲

➡ आओ कुछ करें

1. (क) पत्र दो हृदयों को जोड़ने वाले सेतु होते हैं। ये विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का सबसे सरल एवं सुगम साधन हैं। पत्रों में मानव के मनोभाव एवं विचार अभिव्यक्त होते हैं। पत्रों के माध्यम से जितनी सरलता से हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं, उतना अन्य माध्यमों से नहीं। वर्तमान युग में पत्र जीवन का अभिन्न अंग माने जाते हैं।

(ख) प्रमुख रूप से पत्र चार प्रकार के होते हैं-

1. प्रार्थना पत्र
2. निजी-पत्र
3. व्यावसायिक पत्र
4. सरकारी पत्र

(ग) पत्र लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

1. **सरलता—** पत्र की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा स्पष्ट होनी चाहिए। उलझी, अस्पष्ट तथा जटिल भाषा के प्रयोग से पत्र नीरस एवं प्रभावहीन बन जाता है।
2. **स्पष्टता—** पत्र में अर्थ या आशय की स्पष्टता होनी चाहिए जिससे पत्र पढ़ने वाला पत्र लिखे जाने का आशय जान सके।
3. **संक्षिप्तता—** पत्र में बहुत ही आवश्यक बातें सार रूप में लिखी जानी चाहिए।

4. **मौलिकता—** पत्र में परंपरागत, घिसे-पिटे वाक्यों से पृथक नए शब्दों तथा वाक्यों का समावेश करना चाहिए। पत्र-लेखक को पत्र में स्वयं के विषय में कम और प्राप्तकर्ता के विषय में अधिक लिखना चाहिए।

(ख) परीक्षा भवन,
नई दिल्ली
दिनांक : 27 फरवरी 20--
आदरणीय भैया,
सादर प्रणाम।
मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी प्रसन्न होंगे। ग्रीष्मावकाश में मैंने अपना समय बहुत अच्छी तरह बिताया। मैंने एक नई कोडिंग भाषा सीखी और सुबह-सुबह योग करना शुरू किया। साथ ही, मैंने अपनी पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ कहानियों की कुछ किताबें भी पढ़ीं। अगले महीने छुट्टियों में मिलने के बाद मैं आपको और बातें विस्तार से बताऊँगा।
माता जी व पिता जी को मेरा चरण स्पर्श और छोटी बहन मधुरा को ढेर सारा प्यार।
आपका छोटा भाई
स्पर्श

2. कानपुर नगर
24 मार्च 20--
प्रिय भाई मोहित,
सप्रेम नमस्ते
मुझे कल ही तुम्हारे परीक्षा परिणाम के बारे में पता चला। यह जानकर बेहद खुशी हुई कि तुमने दसवीं की परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त की और अपने जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया। अंततः तुम्हारी मेहनत और लगन रंग लाई है, जिस पर मुझे और परिवार के सभी सदस्यों को बहुत गर्व है। तुम्हारी यह उपलब्धि सभी के लिए प्रेरणा है। इसी तरह आगे बढ़ते रहो और भविष्य में भी उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करो।
तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।
तुम्हारी बड़ी
बहन सुलेखा

3. 43, गाँधी रोड,
फैजाबाद,
दिनांक : 03/04/20--
आदरणीय पिताजी
सादर चरण स्पर्श।
मुझे कल माता का पत्र प्राप्त हुआ, जिससे पता चला कि आप पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं और बुखार से पीड़ित हैं। यह जानकर मुझे बहुत चिंता हो रही है। आप हमेशा सबको मजबूत रहने की सीख देते हैं, लेकिन अपनी सेहत पर भी ध्यान दें। कृपया समय पर दवाइयाँ लें और आराम करें। मैंने डॉक्टर से भी बात की है, उन्होंने कहा है कि आपको आराम की बहुत आवश्यकता है।
आप अपना पूरा ध्यान रखें और चिंता बिल्कुल न करें। मैं जल्द ही आपसे मिलने आऊँगा।
आपका बेटा
नीरज

4. सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
रानी लक्ष्मीबाई इंटर कॉलेज,
झाँसी
विषय— शुल्क मुक्ति के लिए प्रार्थना-पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा सात का छात्र हूँ। मेरे पिताजी एक छोटे व्यवसायी हैं और

पिछले कुछ महीनों से व्यवसाय में लगातार घाटा होने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई है। मैं पढ़ने में बहुत होनहार हूँ और हर वर्ष कक्षा में अव्वल आता हूँ। मेरी पढ़ने की तीव्र इच्छा है, परंतु आर्थिक तंगी के कारण विद्यालय का शुल्क जमा करने में असमर्थ हूँ।

अत: आपसे निवेदन है कि मेरा विद्यालय शुल्क माफ करने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं कड़ी मेहनत करूँगा और सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विवेक चौहान

कक्षा – सात

दिनांक- 27 जुलाई 20--

22 कहानी लेखन

❊ ❊

(1) लालची कुत्ता

एक समय की बात है, एक कुत्ता था जो बहुत लालची था। वह अक्सर मांस की दुकान से मांस के टुकड़े चुराया करता था। एक दिन, उसने एक दुकान से मांस का टुकड़ा चुराया और उसे मुँह में दबाकर भागने लगा, लेकिन दुकानदार उसके पीछे दौड़ा। भागते हुए वह एक नदी के किनारे पहुँचा और पुल से नदी पार करते समय, उसे नदी के पानी में अपनी परछाई दिखाई दी। उसे लगा कि पानी में कोई दूसरा कुत्ता है और उसके पास भी मांस का टुकड़ा है। उसके मन में लालच आ गया। वह उससे मांस का टुकड़ा छीनने के लिए अपनी ही परछाई पर झपटा, उसने जैसे ही भौंकने के लिए अपना मुँह खोला, उसके मुँह का मांस का टुकड़ा नदी के पानी में गिर गया और उसे भूखा ही रहना पड़ा।

शिक्षा – लालच बुरी बला है। जो कुछ हमारे पास है, हमें उसी में संतुष्ट रहना चाहिए।

2. कपटी मित्र

मोहन और सोहन नाम के दो मित्र हरिपुर गाँव में रहते थे। मोहन सीधा-सादा था किंतु सोहन कपटी था। एक दिन दोनों मित्र लकड़ी काटने के लिए जंगल में गए। दोनों के बीच बातें हो रही थीं। सोहन, मोहन के सामने अपनी मित्रता और बहादुरी की डींग हाँक रहा था।

जंगल में थोड़ी दूर चलने के बाद एकाएक दोनों मित्रों ने कुछ दूरी पर भालू को देखा। वह उनकी ओर ही आ रहा था। दोनों के होश उड़ गए, पर सोहन तुरंत संभल गया। वह पेड़ पर चढ़ना जानता था इसलिए दौड़कर पेड़ पर चढ़ गया। उसने मोहन की जरा भी चिंता नहीं की। मोहन डरकर सोहन को पुकारने लगा, परंतु सोहन ने सुनी-अनसुनी कर दी। मोहन को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था।

सौभाग्य से मोहन को एक उपाय सूझा। वह जमीन पर साँस रोककर मुर्दे की तरह लेट गया। भालू मोहन के पास आया। उसने मोहन के कान सूँघे और उसे मरा हुआ समझकर वहाँ से चला गया।

भालू के वहाँ से जाने के बाद सोहन पेड़ से उतरकर मोहन के पास आया। इधर मोहन भी भालू के जाने के बाद उठकर खड़ा हो गया। सोहन ने मोहन से पूछा, ''भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा?'' मोहन ने जवाब दिया कि, ''भालू ने कहा कि जो मित्र मुसीबत में भाग खड़े होते हैं, वे कपटी होते हैं, अत: कपटी मित्रों से दूर रहना चाहिए।''

यह सुनते ही शर्म के मारे सोहन का सिर

नीचा हो गया।

(ख) शिक्षा - पूरा परिचय पाए बिना मित्रता नहीं करनी चाहिए।

मगध देश में चम्पकवती नामक एक बड़ा सा जंगल था। वहाँ पर बहुत समय से एक कौवा और एक हिरण बड़े प्रेम से मित्रतापूर्वक रहते थे। हिरण बहुत ही हृष्ट-पुष्ट था, और जंगल में स्वच्छन्द इधर-उधर घूमा करता था।

एक दिन एक सियार ने उसे देखा और विचार करने लगा कि- अहा! इसका मीठा सुस्वादु मांस मैं किस प्रकार खाऊँ। अच्छा पहले इससे मेल-जोल बढ़ाऊँ और विश्वास उत्पन्न करूँ। ऐसा विचार करके हिरण के पास जाकर वह सियार बोला हे मित्र! कहिए, आप कुशल से तो हैं न?

हिरण बोला, "भाई, तुम कौन हो?" सियार बोला- मैं सियार हूँ, मेरा नाम क्षुद्रबुद्धि है। इस वन में मित्रों से रहित होने के कारण मृतकों की तरह पड़ा रहता हूँ। इस समय आप जैसे सज्जन मित्र को पाकर अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मानो मैं पुनः जीवलोक में आ गया हूँ। अब मैं सदा आपके साथ ही रहूँगा। हिरण ने कहा- अच्छा जैसी तुम्हारी इच्छा।

शाम होने पर हिरण सियार के साथ अपने निवास पर आ गया। वहाँ चम्पा के वृक्ष पर उस हिरण का पुराना मित्र सुबुद्धि नामक कौवा बैठा हुआ था। हिरण को सियार के साथ देखकर कौवा बोला— मित्र चित्रांग! तुम्हारे साथ दूसरा यह कौन है?

हिरण बोला— यह क्षुद्रबुद्धि सियार है। हम लोगों के साथ मित्रता करने आया है।

कौवा बोला— मित्र! बिना जाने, अचानक से आए हुए व्यक्ति के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए।

यह सुनकर सियार बोला— जब आप दोनों पहली बार मिले थे तो किसको किसके बारे में पता था, फिर भी आप दोनों में प्रेम बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए मेरे ऊपर भी विश्वास करिए। जैसे ये हिरण मेरा मित्र है वैसे ही आप भी मेरे मित्र हैं।

तब हिरण बोला— अब हम तीनों प्रेम से रहा करेंगे। यह सुनकर कौवा शान्त हो गया। रात बीतने पर सभी अपने-अपने काम पर लग गए। धीरे-धीरे अपने व्यवहार से सियार ने हिरण का विश्वास जीत लिया।

एक दिन सियार ने हिरण से एकान्त में कहा- मित्र! इसी वन में एक स्थान पर धान का हरा-भरा खेत है। चलो मैं तुमको दिखाता हूँ। वहाँ तुम जी भरकर धान की फसल खा सकोगे। ऐसा कहकर सियार हिरण को धान के खेत में ले गया। अब तो हिरण रोज ही धान की फसल खाने लगा। एक दिन उस खेत के मालिक ने हिरण को धान की फसल खाकर जाते हुए देख लिया। उसी रात उसने खेत में जाल लगा दिया। अगले दिन हिरण जब खेत में चरने गया तो वह उसी जाल में फँस गया। हिरण को जाल में फँसा देखकर सियार मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ और सोचने लगा कि अब इस हिरण की खाल उतारी जाएगी तो मुझे ढेर सारा मांस और हड्डियाँ खाने को मिलेंगी।

इधर जाल में फँसे हिरण ने बड़ी उम्मीद के साथ सियार की ओर देखा और सहायता की गुहार लगाई। सियार बोला- हे मित्र! ये जाल तो अंतड़ियों का बुना हुआ है और आज मेरा व्रत है। यदि तुम बुरा न मानो तो कल सुबह होते ही मैं इस जाल को काट दूँगा। ऐसा कहकर सियार वहाँ चला गया और थोड़ी दूर जाकर एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया। वह सुबह की प्रतीक्षा करने लगा।

बहुत रात बीत जाने पर भी जब हिरण और सियार वापस नहीं आए, तब कौए को चिंता होने लगी। वह हिरण को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते खेत के पास जा पहुँचा। वहाँ अपने मित्र को जाल में फँसा देखकर उसने दुखी होकर हिरण से पूछा- हे मित्र! तुम्हारी यह दशा कैसे हुई और तुम्हारा मित्र सियार कहाँ है?

हिरण लज्जित होकर बोला- हे मित्र! मैंने तुम्हारी बात न मानकर बहुत बड़ी भूल की। यह सब उसी सियार के कारण हुआ है। वह यहीं-कहीं

छिपकर मेरे मरने की प्रतीक्षा कर रहा है।

हिरण की पूरी बात सुनकर कौवा बोला– मित्र! धैर्य रखो। अब मैं तुम्हें जैसा कहता हूँ वैसा ही करना। सुबह जब खेत का मालिक आने लगे तो तुम अपना पेट फुलाकर, टाँगें कड़ी करके लेट जाना। मैं तुम्हारे ऊपर चोंच मारूँगा पर तुम कोई भी हरकत मत करना।

हिरण ने कौवे की बात मान ली। सुबह जब किसान खेत की ओर आया, तो हिरण ने वैसा ही किया जैसा कौवे ने बताया था। किसान ने जब कौवे को हिरण के शरीर पर चोंच मारते देखा तो उसने समझा कि हिरण जाल में तड़पकर मर गया है। यह सोचकर किसान हिरण के पास आया और निश्चित होकर जाल बटोरने लगा।

कौवे ने जैसे ही अवसर देखा, तुरंत ही आवाज करके हिरण को भाग जाने का संकेत किया। कौवे का संकेत पाकर हिरण तुरंत ही भाग खड़ा हुआ।

हिरण को भागता देख किसान ने अपनी लाठी फेंककर मारी; पर दुर्भाग्य से वह लाठी हिरण को न लगकर पास में छिपकर बैठे सियार को लग गई और वह वहीं मर गया।

इस प्रकार हिरण अपनी सच्ची मित्रता के कारण बच गया और सियार ने अपनी नीचता का फल पाया।

4. एक बार एक चींटी पानी पी रही थी कि वह अचानक पानी में गिर गई। वहीं पास ही पेड़ पर बैठा कबूतर यह देख रहा था। उसने जल्दी से पेड़ से एक पत्ता तोड़कर पानी में डाल दिया। चींटी उस पत्ते पर चढ़ गई। कबूतर ने वह पत्ता पानी से निकाल कर जमीन पर रख दिया। इस प्रकार कबूतर ने उस चींटी को पानी में डूबकर मरने से बचाया।

कुछ दिनों बाद, एक शिकारी उस जंगल में आया। उसके हाथ में एक बंदूक थी। शिकारी ने एक पेड़ पर बैठे उसी कबूतर को देखा, जिसने चींटी की जान बचाई थी। शिकारी कबूतर को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी बंदूक से कबूतर पर निशाना लगाया। उसे ऐसा करते हुए एक चींटी ने देख लिया। शिकारी जब गोली चलाने वाला था तभी उस चींटी ने उसके पैर में जोर से काट लिया और शिकारी का निशाना चूक गया। इस प्रकार चींटी ने अपनी सूझबूझ से कबूतर की जान बचा ली।

शिक्षा – कर भला तो हो भला।

23 संवाद लेखन

❊ ❊

➡ आओ कुछ करें

1. रवि– हे अंजलि, क्या तुमने ध्यान दिया कि आजकल हमारे चारों ओर सब कितना साफ-सुथरा दिखता है?

अंजलि– जी रवि! लोगों को स्वच्छता की जिम्मेदारी लेते हुए देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। इससे बहुत फर्क पड़ता है।

रवि– बिल्कुल! स्वच्छता का मतलब सिर्फ अपने आसपास को साफ-सुथरा रखना ही नहीं है; यह हमें स्वस्थ रहने में भी मदद करती है।

अंजलि– बिल्कुल सही! जब वातावरण स्वच्छ होता है, तो रोगाणु और बीमारियाँ कम हो जाती हैं।

रवि– मैं आपसे सहमत हूँ। हमें अधिक से अधिक लोगों को कूड़ा न फैलाने और कूड़ेदानों का सही ढंग से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अंजलि– बिल्कुल सही! साफ-सफाई बनाए रखना एक दैनिक आदत होनी चाहिए, न कि केवल विशेष अवसरों के

दौरान।

रवि– बहुत खूब कहा, अंजलि! आइए हम सब अपने आसपास को साफ रखने और जागरूकता फैलाने का संकल्प लें।

अंजलि– मैं आपसे सहमत हूँ। चलो बेहतर जीवन बनाने के लिए स्वच्छता को प्राथमिकता दें।

2. प्रिया– रिया, हिंदी के नए गुरुजी कैसा पढ़ाते हैं?

रिया– अरे बहुत ही बेहतरीन! उनका पढ़ाने का तरीका बहुत ही सरल है। वे पाठ को बहुत ही रोचक तरीके से पढ़ाते हैं, जिस कारण पूरी कक्षा उन्हें बहुत ध्यान से सुनती है।

प्रिया– क्या तुम सच कह रही हो?

रिया– हाँ, वे इतना अच्छे से समझाते हैं कि पाठ पढ़ते ही याद हो जाता है। रटने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

प्रिया– मैंने तो एक बार उनकी व्याकरण की क्लास ली थी। वे व्याकरण भी बहुत सरल तरीके से पढ़ाते हैं।

रिया– और वह कक्षा में सबको हिंदी बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो बहुत अच्छा लगता है।

प्रिया– अब मैं भी नियमपूर्वक उनकी कक्षा में जाया करूँगी।

3. अच्छे संवाद लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें-

(i) **सरलता—** भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

(ii) **स्वाभाविकता—** संवाद, बोलने वाले पात्रों के अनुसार स्वाभाविक लगें।

(iii) **संक्षिप्तता—** बातचीत अधिक लंबी न होकर मुद्दे पर हो।

(iv) **उचित विराम चिह्न—** वाक्य के अंत में और बीच में सही विराम चि□ों का प्रयोग करें।

(v) **विषय केंद्रित—** संवाद दिए गए विषय के अनुरूप होने चाहिए।

6. रितिक– सोहन, तुम आजकल इतने फुर्तीले कैसे लग रहे हो?

सोहन– क्योंकि मैं हर सुबह योगासन और प्राणायाम करता हूँ।

रितिक– क्या योग से सच में इतना फर्क पड़ता है?

सोहन– हाँ, इससे न केवल शारीरिक मजबूती मिलती है, बल्कि एकाग्रता भी बढ़ती है जिससे पढ़ाई में मदद मिलती है।

रितिक– मुझे भी इसका लाभ उठाना चाहिए।

सोहन– बिल्कुल! योग तनाव को दूर करता है और शरीर को स्वस्थ रखता है।

रितिक– यदि ऐसा है तो कल से मैं भी तुम्हारे साथ योग करने चला करूँगा।

5. छात्रा– सर, आपने 'मेक इन इंडिया' के बारे में बताया था। यह क्या है?

अध्यापक– नेहा, 'मेक इन इंडिया' भारत सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण हब बनाना है।

छात्रा– सर, इससे क्या फायदा होगा?

अध्यापक– इससे न केवल हमारे देश में अच्छी वस्तुएँ बनेंगी अपितु रोजगार भी बढ़ेगा।

छात्रा– सर, क्या अब सभी वस्तुओं का निर्माण भारत में ही होगा?

अध्यापक– बिल्कुल, हमारा लक्ष्य है कि भारत में वस्तुओं का अधिकाधिक निर्माण और निर्यात हो।

छात्रा– इतनी महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आपका धन्यवाद सर।

अध्यापक– सदा प्रसन्न रहो।

24 निबंध

⁕ ⁕

1. खेलों का महत्व

प्रस्तावना— स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है— यह कहावत खेलों के महत्व को पूरी तरह स्पष्ट करती है। खेल न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अनिवार्य हैं। आज की तनावपूर्ण जीवनशैली और तकनीकी युग में खेलों की भूमिका और भी बढ़ गई है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य— नियमित रूप से खेल खेलने से हमारा शरीर मजबूत, चुस्त और ऊर्जावान बना रहता है। यह मांसपेशियों को मजबूत करता है, हृदय की क्षमता बढ़ाता है और वजन भी नियंत्रित रखता है। इसके साथ ही खेल मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अद्भुत हैं। वे तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में मदद करते हैं और मन को ताजगी प्रदान करते हैं।

जीवन कौशल और अनुशासन— खेल हमें केवल जीतना ही नहीं अपितु हार को भी सम्मानपूर्वक स्वीकार करना सिखाते हैं। खेलों से मानव के भीतर धैर्य, आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास होता है। अनुशासन, समय का प्रबंधन और नेतृत्व के गुण खेल के मैदान में ही सीखे जा सकते हैं।

छात्रों के लिए खेलों का महत्व— छात्रों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद भी उतना ही जरूरी है। यह उन्हें पढ़ाई के तनाव से मुक्त करता है। खिलाड़ी छात्र अधिक अनुशासित और शारीरिक रूप से फिट होते हैं।

निष्कर्ष— खेल हमारे जीवन को अधिक संतुलित और सुखी बनाते हैं। हर इंसान को अपने दैनिक दिनचर्या में कम से कम 30 मिनट का समय शारीरिक गतिविधि या खेल के लिए देना चाहिए ताकि एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन जिया जा सके।

2. समाचार पत्र की उपयोगिता

प्रस्तावना— समाचार पत्र को समाज का आईना और सूचना का सबसे पुराना और विश्वसनीय स्रोत माना जाता है। सुबह की चाय के साथ देश-विदेश की ताजा खबरों से अवगत होना एक आदत की तरह है। यह ज्ञान का भंडार है जो हमारे चारों ओर हो रही घटनाओं के बारे में हमें सूचित करता है।

ज्ञान का विस्तार— समाचार पत्र में केवल समाचार ही नहीं बल्कि राजनीति, खेल, व्यवसाय, कला, संस्कृति, विज्ञान और शिक्षा जैसे विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी होती है। इससे सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है। छात्रों के लिए यह भाषाई कौशल, शब्दावली और लेखन क्षमता को सुधारने का एक शानदार जरिया है।

जागरूकता और शिक्षा— समाचार पत्र आम जनता को जागरूक करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। संपादकीय लेखों के माध्यम से हम सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकते हैं। यह लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में शिक्षित करते हैं।

विज्ञापन और मनोरंजन— समाचार पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से हमें बाजार की जानकारी मिलती है। इसके अलावा कहानियाँ, पहेलियाँ, कॉमिक्स, फिल्म समीक्षा और चुटकुले आदि मनोरंजन के साधन प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष— आज के डिजिटल युग में समाचार वेबसाइटों के बावजूद प्रिंट समाचार पत्रों का महत्व कम नहीं हुआ है। यह साक्षरता को बढ़ावा देने और एक जागरूक नागरिक बनाने के लिए बहुत उपयोगी है। हमें समाचार पत्र पढ़ने की आदत को जीवित रखना चाहिए।

3. प्रदूषण की रोकथाम तथा समाधान

प्रस्तावना— प्रदूषण आज की सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है। वायु, जल और मिट्टी में हानिकारक पदार्थों का मिलना ही प्रदूषण है। यह न केवल प्रकृति बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव डालता है। इसलिए समय रहते इसकी रोकथाम बहुत आवश्यक है।

प्रदूषण के कारण— वाहनों से निकलने वाला धुआँ, कारखानों का अपशिष्ट, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और रसायनों का कृषि में प्रयोग प्रमुख कारण हैं।

रोकथाम के उपाय-

1. **वृक्षारोपण—** अधिक से अधिक पेड़ लगाना ही हवा को शुद्ध करने का सबसे अच्छा उपाय है।
2. **प्लास्टिक पर रोक—** सिंगल-यूज प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह से बंद होना चाहिए।
3. **सार्वजनिक परिवहन—** निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक परिवहन, साइकिल या पैदल चलने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
4. **कचरा प्रबंधन—** कचरे को इधर-उधर फेंकने के स्थान पर उचित निपटान और रीसाइक्लिंग करना चाहिए।
5. **नवीकरणीय ऊर्जा—** सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

समाधान— सरकार को औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण के लिए कड़े नियम लागू करने चाहिए। लोगों में जागरूकता फैलाना आवश्यक है कि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तभी मानव जाति सुरक्षित रहेगी।

निष्कर्ष— प्रदूषण को कम करना केवल सरकार का नहीं बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। हमें स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण की प्रथाओं को अपने दैनिक जीवन में शामिल करना चाहिए।

4. गणतंत्र दिवस

प्रस्तावना— गणतंत्र का अर्थ है— 'जनता का जनता के लिए जनता द्वारा शासन'। भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य है जिसका अर्थ है कि हमारे देश का प्रमुख कोई राजा या रानी नहीं बल्कि जनता द्वारा चुना गया प्रतिनिधि (राष्ट्रपति) होता है।

गणतंत्र दिवस का इतिहास— 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र जरूर हुआ था लेकिन उसका अपना संविधान नहीं था। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ और भारत को एक संप्रभु लोकतांत्रिक और गणराज्य घोषित किया गया। तब से हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महत्व— गणतंत्र दिवस भारतीय गर्व का दिन है। यह दिन हमें संविधान के उन आदर्शों न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की याद दिलाता है। यह उन स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को श्रद्धांजलि देने का समय है जिन्होंने एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत का सपना देखा था।

उत्सव और संकल्प— इस दिन नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर भव्य परेड और सांस्कृतिक झाँकियाँ निकाली जाती हैं जो भारत की विविधता और रक्षा शक्ति को दर्शाती हैं। यह दिन हमें एक नागरिक के रूप में हमारे कर्तव्यों की याद दिलाता है।

निष्कर्ष—गणतंत्र दिवस सिर्फ छुट्टी का दिन नहीं बल्कि राष्ट्र को समृद्ध और मजबूत बनाने का संकल्प लेने का दिन है। हमें अपने संविधान का सम्मान करना चाहिए और देश के विकास में योगदान देना चाहिए।

5. आदर्श मित्र के गुण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज की इकाई होता है। उसे समाज के प्रति कुछ कर्तव्य निभाने पड़ते हैं तथा समाज में अनेक लोगों पर निर्भर रहना पड़ता है। अतएव उसके लिए एकाकी जीवन बिताना कठिन बन जाता है। उसे एक अच्छे सहयोगी की जरूरत होती है, जिसमें वह विचारों का आदान-प्रदान कर सके। हमें एक आदर्श मित्र मिल जाये तो अपना बड़ा सौभाग्य समझना चाहिए।

मित्र का जीवन में होना अति आवश्यक है। वह जीवन के सुख-दुख में हमारा साथ देता है, हमें बुरे रास्ते से हटाकर अच्छे मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। वह सत्यवादी, कर्तव्यनिष्ठ, कार्य कुशल तथा अपने व्यवहार में ईमानदार होता है। उसमें आडम्बर की भावना नहीं रहती। उसमें दृढ़ निश्चय की भावना होती है। इन सभी गुणों का प्रभाव हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता है। अत: हम अपने मित्र के आदेशानुसार ही कार्य करते हैं।

आदर्श मित्र हितैषी होता है। जब हम अपने जीवन में सांसारिक प्रलोभनों में फँस जाते हैं, जब हमारे अज्ञान को दूर करके वह अपने मार्ग-दर्शन के द्वारा हमें प्रलोभन से बचाता है। वह जीवनोपयोगी कार्यों में मदद करके हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाता है। कभी-कभी वह कुछ वचनों या क्रोध का भी प्रयोग हमारे व्यवहार और चाल-चलन में सुधार करने के लिए करता है। जिस प्रकार कड़वी दवा हमारे स्वास्थ्य में सुधार लाती है, उसी प्रकार उसकी तीखी बातें हमारे दुर्गुणों को दूर कर हममें अच्छे संस्कार भर देती हैं। आदर्श मित्र सुशील और सच्चरित्र होता है। उसकी कार्य पद्धति का अनुसरण करके हम अपने जीवन के कार्यों को नियमित बनाते हैं। एकाग्रता से कार्य करना सीखते हैं। आदर्श मित्र के सहयोग से अपने जीवन को सुख और संतोष से भर देते हैं। आदर्श मित्रों में किसी प्रकार का भेदभाव या ईर्ष्या की कोई बात नहीं रहती। जहाँ अविश्वास होता है, वहाँ मित्रता का निर्वहन नहीं हो सकता है। जिस प्रकार आदर्श मित्र हमारे साथ अच्छा व्यवहार करता है, वैसे ही हमें भी आदर्श मित्र बनने का प्रयास करना चाहिए।

❊ ❊